P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-12* August- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में उनकी व्यावसायिक रूचि का अध्ययन

# Study of Vocational Interest of Students of Higher Secondary Schools in Relation to Family Environment and Academic Achievement

**Paper Submission:14/08/2021, Date of Acceptance:24/08/2021, Date of Publication: 25/08/2021**

**दिलीप कुमार झा**
(प्राचार्य)
(शोधनिर्देशक)
आई.ए.एम.आर. बी.एड. कॉलेज, दुहाई,
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

**प्रतिभा रानी**
शोधकत्री
शिक्षा शास्त्र विभाग
मेवाड़ विश्वविद्यालय
चित्तौड़गढ, राजस्थान, भारत

**सारांश**

माध्यमिक शिक्षा जीवन की मध्य कड़ी होती हैं इस स्तर पर व्यवसाय चयन की दुविधा विद्यार्थियों के लिए परेशानी का सबब बनती है इस समस्या के निवारण हेतु शोधार्थी ने व्यवसायिक अभिरुचि एवं पारिवारिक पर्यावरण के नाम उपकरणों की सहायता से आंकड़ों का संग्रह कर प्रसरण विधि द्वारा प्रदत्त विश्लेषण के माध्यम से यह निष्कर्ष निकाला है कि व्यावसायिक अभिरुचि पर पारिवारिक पर्यावरण का प्रभाव पड़ता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में दक्षिणी दिल्ली स्थित माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की विभिन्न व्यावसायिक रुचियों का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन हेतु दक्षिणी दिल्ली के विभिन्न स्कूलों में अध्ययनरत 400 विद्यार्थियों ( 200 छात्र एवं 200 छात्राओं) का न्यादर्श चयन, स्तरीकरण विधि द्वारा किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के आंकड़ों के संकलन के लिये डा० एस० पी0० कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित "व्यावसायिक रुचि प्रपत्र मापनी" का चयन किया गया है। प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये मध्यमान, मानक विचलन व टी० परीक्षण का प्रयोग किया गया और निष्कर्ष में पाया गया कि लिंगीय आधार पर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक रुचियों के अधिकांश क्षेत्रों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है; केवल मात्र एक व्यावसायिक रुचि क्षेत्र गृह संबंधी में सार्थक अन्तर पाया गया है।

Secondary education is the middle link of life, at this stage, the dilemma of choosing a profession becomes a problem for the students. To solve this problem, the researcher collected the data with the help of tools in the name of professional interest and family environment and analysis provided by the method of variance. Through this it has been concluded that family environment has an effect on occupational aptitude. In the present research study, various vocational interests of secondary level students located in South Delhi have been studied. For this study, a sample selection of 400 students (200 boys and 200 girls) studying in different schools of South Delhi has been done by stratification method. For the compilation of the data of the present study, "Professional Interest Form Scale" prepared by Dr. S.P. Kulshrestha has been selected. For the analysis of the obtained data, mean, standard deviation and t-test were used and it was found that there is no significant difference in most areas of vocational interests of secondary level students and girls on gender basis; Significant difference was found in only one occupational interest area, home related.

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-12* August- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

**मुख्य शब्द**
**Key words**

पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि, छात्र एवं छात्रा, उच्चत्तर माध्यचिक विद्यालय, व्यावसायिक रुचियों, तुलनात्मक अध्ययन, मध्यमान, मानक विचलन।

Family Environment, Academic Achievement, Student and Student, Higher Secondary School, Vocational Interests, Comparative Studies, Mean, Standard Deviation.

**प्रस्तावना**

मानव प्रकृति का सर्वाधिक बुद्धिमान प्राणी तथा ईश्वर की अन्य कृतियों में सर्वश्रेष्ठ कहा जाता है। इस तथ्य के मूल में 'शिक्षा' ही वह आधारभूत प्रक्रिया है, जिसमें मानव का पूर्ण विकास होता है। शिक्षा का उद्भव 'सृष्टि' में मानव के सृजन के साथ ही प्रारम्भ हो गया था। शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों में से एक प्रमुख उद्देश्य जीविकोपार्जन के लिये मार्गदर्शन करना भी है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु व्यावसायिक शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। व्यावसायिक शिक्षा की प्राप्ति के लिये व्यावसायिक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है, जिसके अन्तर्गत छात्रों में श्रम के प्रति आदर व रुचि उत्पन्न करना व हस्तकला के कार्यों को महत्व देना परमावश्यक है। महात्मा गाँधी जी के अनुसार, "शिक्षा को बेरोजगारी के विरुद्ध एक बीमा होना चाहिये।" अर्थात् शिक्षा में व्यावसायिक दृष्टिकोण का होना अत्यन्त आवश्यक है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के छोटे बड़े तमाम व्यवसाय उद्योगों की स्थापना हुई। परमाणु शक्ति के विकास से औद्योगीकरण के क्षे त्र में अकस्मात काफी परिवर्तन हुआ। परमाणु शक्ति के लिये प्रयोग के लक्ष्य की ओर बढ़ने से अनेक नवीन व्यवसायों का अस्तित्व कायम हुआ। यातायात के दूरगामी विकास साधनों के कारण आज भारतीय नागरिक यह सोचने लगे है कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आज की व्यवसायिक प्रतिस्पर्धा चल रही है। उसमें ये भी अपना स्थान बना चुके है। विदेशों में समुन्नत व्यवसाय से अर्थोपार्जन की प्रवृति बढ़ती जा रही है। व्यवसाय में विविधता को दृष्टिगत रखते हुए माध्यमिक शिक्षा आयोग ने बहुउद्देशीय शिक्षा संस्थानों की सिफारिश की थी । जिसके अन्तर्गत कक्षा 9वीं के प्रवेश के समय विषयों के चुनाव में अनेक विकल्प रखें तथा पाठ्यक्रम में उचित परिवर्तन किया गया। किन्तु यह सब उतना सार्थक सिद्ध नहीं हुआ जितनी अपेक्षा थी। नयी शिक्षा नीति के तहत 10+2+3 की पद्धति लागू की गई, इसमें विद्यार्थी को कक्षा 10वीं के बारे में पूर्व सामर्थ्य तथा सभी विषयों के संबंध में पूर्ण जानकारी तथा उनमें संबंधित व्यवसायों की जानकारी के बाद ही ग्यारहवीं कक्षा से अपनी आकांक्षा तथा रूचि अनुसार विषयों का चुनाव करने की व्यवस्था की गई। इस संबंध में निर्देशन तथा परामर्श देने का दायित्व भी शिक्षक और विद्यालयीन प्रशासकों को सौंपा गया। उत्तम और अनुकूल शिक्षा बच्चों को इस योगय बनाती है कि शिक्षक समझा सकते है कि छात्र-छात्राओं की रूचि किस दिशा में आगे बढ़ने की है। उनका समायोजन किस तरीके से किया जाये ताकि वे सर्वोत्तम विकास कर उत्तम रोजगार प्राप्त कर सकें।

**अध्ययन की आवश्यकता**

भारत में व्यावसायिक शिक्षा की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। प्रारम्भ में अधिकांशतया बालक अपने माता-पिता से घर पर ही अनौपचारिक रूप में इस शिक्षा को ग्रहण करते थे। संगठित रूप में व्यावसायिक शिक्षा ब्रिटिश युग की देन है। सर्वप्रथम व्यावसायिक शिक्षा अंग्रेजी सरकार की आवश्यकताओं पर निर्भर करती थी। भारत में तत्कालीन कुछ कॉलेजों व महाविद्यालयों में व्यावसायिक व प्राविधिक शिक्षा प्रदान करने हेतु विशेष व्यावसायिक विद्यालय खोले गये। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् सभी विचारकों, शिक्षाविदों, नेतागणों व विभिन्न शिक्षा आयोगों द्वारा भी शिक्षा के व्यावसायीकरण की आवश्यकता पर जोर दिया। शिक्षा के व्यावसायीकरण की आवश्यकता का आंकलन निम्न बिन्दुओं से किया जा सकता है:

1. बेरोजगारी की समाधान।
2. छात्रों में विभिन्न क्षमताओं व योग्यताओं का विकास।
3. देश का आर्थिक विकास।

4. सामाजक समायोजन का विकास।
5. सामाजिक दक्षता की प्राप्ति।
6. नैतिक मूल्यों का विकास।

**अध्ययन का उद्देश्य**

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की व्यावसायिक रुचियों को जानना है। यह एक निर्विवाद सत्य है कि प्रकृति निर्मित कोई भी दो वस्तुएँ एक समान नहीं होती हैं; उसमें किसी न किसी रूप में अन्तर पाया जाता है। इसी प्रकार छात्र-छात्राओं की रुचियों में अन्तर पाया जाता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बालक व बालिकाओं की शिक्षा में व्यक्तिगत विभिन्नता का महत्वपूर्ण स्थान है अतः व्यक्तिगत विभिन्नता के आधार पर शिक्षा की आवश्यकता का शैक्षिक व व्यावसायिक निर्देशन की दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। माध्यमिक स्तर पर 13 से 15 वर्ष की आयु के छात्र-छात्राओं की रुचियाँ स्थाई नहीं होती हैं परन्तु 18 से 19 वर्ष की आयु के किशोरों की अभिरुचियाँ अधिक स्थाई हो जाती हैं। छात्रों की रुचियों का उनकी शैक्षिक सफलता पर अधिक प्रभाव पड़ता है। व्यवसाय व रुचि दोनों एक सिक्के के दो पहलुओं के समान हैं अर्थात् एक-दूसरे से घनिष्ट रूप में सम्बधित है।

वर्तमान औद्योगीकरण के युग में नवीन व्यवसायों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। ऐसे समय में विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में से किन व्यवसायों का चयन करें, यह एक प्रमुख समस्या है। इसके लिये पर्याप्त व्यावसायिक निर्देशन की आवश्यकता होती है। व्यावसायिक चयन एक विकास की प्रक्रिया है जो माध्यमिक विद्यालयी शिक्षा के समय में छात्रों की आकांक्षाओं के अन्वेषण से प्रारम्भ होकर व्यावसायिक परिपक्वता, रुचियों, मूल्यों व क्षमताओं की एक विस्तृत श्रृंखला होती है। माध्यमिक स्तर पर यदि छात्रों को उचित निर्देशन नहीं दिया जाता है तो भविष्य में वे समाज में समायोजन करने में असफल रहते हैं। इस स्तर पर छात्रों की चिन्तन क्षमता विकसित होने लगती है। वह यह चिन्तन करना प्रारम्भ कर देता है कि उसे किस क्षेत्र में व्यवसाय का चयन करना चाहिये। ऐसे में छात्रों की व्यक्तिगत विशेषताओं व व्यावसायिक विकल्पों का संज्ञान करने के लिये कई प्रकार की मार्गदर्शन गतिविधियों व अवसरों की आवश्यकता होती है। शोधकर्ती इस बात से सहमत हैं कि अनुभव के परिणामस्वरूप रुचियों का विकास होता है। माध्यमिक विद्यालयी स्तर पर छात्रों को अनुभवों को ग्रहण करने के लिये प्रेरित करना चाहिये। क्योंकि छात्र शैक्षिक व व्यावसायिक विकल्पों की जानकारी प्राप्त करके ही सही व्यावसायिक निर्णय लेने में समर्थ हो पाते हैं। इसलिये शिक्षा व व्यवसाय छात्रों की रुचि से सम्बन्धित होता है। प्रस्तुत अध्ययन में यही उद्देश्य निहित है कि शिक्षा को व्यावसायिक हितों से सम्बन्धित करने से छात्र अपने व्यक्तित्व व रुचियों के क्षेत्रों को विस्तृत करने की योग्यता प्राप्त कर सकते हैं। छात्र अपने कौशल व योग्यता का व्यावसायिक रुचियों के साथ आंकलन कर सकते हैं, अपनी भविष्य की योजना के लिये आत्मज्ञान विकसित करके अपने निर्णयों पर नियन्त्रण करना सीख सकते हैं।

**समस्या कथन**

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में विभिन्न व्यावसायिक रूचियों का अध्ययन" करना है।

**पारिभाषिक शब्दावली**

**व्यावसायिक रूचि**

व्यावसायिक रुचि-इसके अन्तर्गत व्यक्ति वस्तुओं या क्रियाओं का चयन करके उसे पसन्द, नापसन्द के रूप में कोटिबद्ध करता है। अतः व्यावसायिक रुचि किसी वस्तु से सम्बन्ध जोड़ने वाली मानसिक संरचना है, जब बालकों एवं बालिकाओं का किसी कार्य के प्रति ध्यान केन्द्रित होता है, तो वह उसकी व्यावसायिक रुचि कहलाती है। जो कार्य व्यक्ति की मानसिक शक्तियों, क्षमताओं, रुचियों, शैक्षिक योग्यताओं, शारीरिक क्षमताओं और व्यक्ति की विशेषताओं के

अनुकूल हो तो उससे सम्बन्धित कार्य करने में उसे सुविधा रहती है तथा उन्हीं कार्यों को करने में वह अधिक रुचि प्रकट करता है। व्यवसायों की सफलता व्यक्ति की मानसिक क्षमता व रुचि पर निर्भर करती है। व्यावसायिक रूचि से अभिप्राय कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित व्यावसायिक रूचि प्रपत्र के प्राप्त प्राप्तांक से है।

**पारिवारिक वातावरण**

बालक के भविष्य निर्माण में उसके पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण का विशेष महत्व होता है। पारिवारिक वातावरण बालक पर जन्म से पूर्व ही अपना प्रभाव स्थापित करने लगता है । सामाजिक वातावरण भी बालक पर अपना प्रभाव स्थापित करने लगता है किन्तु, इस अवस्था में भी बालक पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव समाप्त नहीं होता है वरन् सामाजिक एवं पारिवारिक वातावरण की अहम भूमिका होती है। पेस्टालॉजी के अनुसार - "परिवार प्यार तथा स्नेह का केन्द्र, शिक्षा का सर्वोत्तम स्थान व बालक की प्रथम पाठशाला है।" परिवार का वातावरण एवं पृष्ठभूमि जिस प्रकार की होती है, बालक स्वयं को उसी में श्रेष्ठ प्रभावित करने की चेष्टा करने लगता है। परिवार बालक के कार्यों को सहयोग प्रदान करता हुआ उसमें सुकृत्यों हेतु एवं शैक्षिक क्षेत्र में प्रोत्साहित करने के दायित्व का निर्वहन करता है। पारिवारिक वातावरण ही बालक के सामाजिक वातावरण का भी निर्धारण करता है। बालक प्रथमतः उन्हीं सामाजिक तत्वों से सम्पर्क होता है जो उसके परिवार से पूर्व संबन्धित होते हैं और इन्हीं सम्बन्धों की श्रृंखला को संजोता हुआ, वह उत्तरोत्तर वृद्धि करता है। वह जो भी कार्य करता है वह अपनी मनोवृत्ति तथा आदतों के आधार पर करता है तथा पारिवारिक वातावरण मनोवृत्ति एवं आदत निर्माण में अहम भूमिका निभाता है। पारिवारिक वातावरण से आशय घर के उस वातावरण से है, जिसमें बालक जम्न लेता है, अपना अधिकाँश समय बिताता है, जिसमें उसके माता-पिता, भाई-बहन (या अन्य सम्बन्धी भी) साथ में रहते हैं। वह इनके साथ अन्तःक्रिया करता है। इस अन्तःक्रिया में विचार, व्यवहार तथा भाव सभी का आदान-प्रदान और निर्माण सम्मिलित हो ता है। पारिवारिक वातावरण के अन्तर्गत वे समस्त परिस्थितियाँ , जो घर में विद्यमान होती हैं तथा वे समस्त गतिविधियाँ और अन्तःक्रियाएँ जो घर में सम्पन्न होती हैं; सम्मिलित हैं। पारिवारिक वातवरण से अभिप्राय डॉ0 डी0के0 झा द्वारा निर्मित पारिवारिक वातावरण परीक्षण के द्वारा प्राप्त प्राप्तांक से है।

**शैक्षिक उपलब्धि**

शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय छात्र एवं छात्राओं के 10वीं कक्षा में प्राप्त प्राप्तांक से है।

**लिंग (छात्र एवं छात्रा)**

दक्षिणी दिल्ली स्थित राजकीय विद्यालयों में ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं से है।

**शोधकार्य के उद्देश्य**

शोध एक उद्देश्य पूर्ण प्रक्रिया है प्रत्येक क्षेत्र में शोध कार्यो का नियोजन किया जाता है जिनका अपना एक विशिष्ट उद्देश्य होता हैं। साधारणतः शोध के तीन उद्देश्य माने जाते है। सैद्धांतिक, तथ्यात्मक तथा व्यावहारिक, शोध कार्य के द्वारा किसी नवीन सिद्धांत का प्रतिपादन होता है। या किसी नवीन व्यवहारिकता को प्रस्तुत किया जाता है। अतः शोधकर्ता को अपने कार्य के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से अंकित करना चाहिए । प्रत्येक शोध कार्य में उद्देश्यों को निश्चित कर अवश्य लिखना चाहिए।प्रस्तुत शोध कार्य के प्रमुख उददेश्य निम्नलिखित हैंः-

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवी के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवीं के छात्रों की व्यावसायिक रूचि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना ।
3. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवीं के छात्रों की व्यावसायिक रूचि पर शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवी के छात्रों की व्यावसायिक रूचि पर लिंग के

प्रभाव का अध्ययन करना।

**शोधकार्य का सीमाड़क्न**

प्रस्तुत शोधकार्य से संबंधित जो सीमा निर्धारित की गई है वह निम्नलिखित है -

1. सम्पूर्ण विद्यालय के स्थान पर केवल दक्षिणी दिल्ली के आठ विद्यालयों का चयन किया गया।
2. सभी कक्षाओं के स्थान पर केवल उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के ग्यारहवीं कक्षा के छात्रा एवं छात्राओं का चयन किया गया।
3. न्यादर्श हेतु केवल 400 छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया है।
4. स्वनिर्मित प्रश्नावली के स्थान पर मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग किया गया।

**साहित्यावलोकन**

सोढ़ी आर.एस. - (2014) इनहोंने राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद में विद्यावारिधि उपाधि हेतु प्राथमिक शिक्षकों की व्यावसायिक रूचियों का विश्लेषण किया, तथा पाया कि शहरी और ग्रामीण की रूचियाँ शिक्षकों की तुलना में अधिक उच्च थी, दोनों वर्ग में विज्ञान के प्रति समान रूचि थी, किन्तु शिक्षिकाओं में साहित्य के प्रति अपेक्षाकृत अधिक थी। ग्रामीण ने शहरी शिक्षिकाओं की तुलना में अध्ययन में अधिक रूचि प्रदर्षित की।

एस. सरस्वती - (2016) ने श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय विद्यापीठ देल्ही में एम् एड उपाधि हेतु कक्षा 10वीं के 400 छात्रों पर अध्ययन किया कि क्या व्यक्तित्व की विधाएँ व्यावसायिक रूचि से सम्बद्ध होती है? इन्होंने निष्कर्ष में पाया की छात्रों की व्यावसायिक रूचियाँ उनकी शैक्षिक रूचियों से सम्बन्धित नहीं होती है, तथा व्यावसायिक रूचियों और व्यक्तित्व की विधाओं का परस्पर सम्बन्ध नहीं होता।

श्रीमती सरोज व्यास - (2016) ने राजस्थान विश्विद्यालय जयपुर में शिक्षा शास्त्र विषय में विद्यावारिधि उपाधि हेतु 9वीं कक्षा के छात्र-छात्राओं की व्यावसायिक रूचियों का मानसिक योग्यता के सन्दर्भ में अध्ययन करके निष्कर्ष दिया कि पब्लिक स्कूल के शत प्रतिषत छात्र प्रतिभाशाली थे जबकि केन्द्रीय विद्यालय के छात्र उच्च से औसत बुद्धि लब्धि वाले थे। राजकीय विद्यालय के छात्र सामान्य से निम्न और मन्दबुद्धि वाले थे, उच्च और प्रतिभाशाली छात्रों ने वैज्ञानिक, प्रशासनिकऔर व्यावसायिक क्षेत्रों में 90ः बुद्धिलब्धि वाले, कलात्मक क्षेत्रों में 74ः से 90ः तथा औसत और निम्नबुद्धि वाले, साहित्यक और अनुनयात्मक क्षेत्रों में 60ः छात्रों ने अपनी रूचि प्रदर्षित की। इन्होंने निष्कर्ष दिया कि बुद्धि लब्धि में विशेष अन्तर नहीं है।

त्रिपाठी सुमन - (2018) ने राजर्षि टंडन ओपन विश्विद्यालय इलाहबाद में शिक्षा शास्त्र विषय में विद्यावारिधि उपाधि हेतु संस्कृत महाविद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं की शैक्षिक और व्यावसायिक रूचियों का अध्ययन करके पाया कि साहित्य, वैज्ञानिक, परिवहन, विनिमय, तकनीकी, ललितकला, वाणिज्य, कृषि आदि क्षेत्रों में अधिक रूचियाँ पाई गई जबकि व्यावसायिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में कम पाई गई।

त्यागी रश्मि - (2019) ने राजस्थान विश्विद्यालय जयपुर में शिक्षा शास्त्र विषय में विद्यावारिधि उपाधि हेतु छात्रों की शैक्षिक और व्यावसायिक रूचियों का अध्ययन सांवेगिक परिपक्वता की दृष्टि से किया। जयपुर केन्द्रीय विद्यालय के कक्षा 11 के छात्र छात्राओं पर कुलश्रेष्ठा का टेस्ट प्रपत्र देकर अध्ययन करके निष्कर्ष दिया कि वैज्ञानिक, प्रशासनिक, कृषि आदि क्षेत्रों में सांवेगिक परिपक्वता में छात्राओं की अधिक रूचि रही।

एन. जया - (2019) ने एल एन मिथिला विश्विद्यालय दरभंगा बिहार में शिक्षा शास्त्र विषय में विद्यावारिधि उपाधि हेतु उच्चमाध्यमिक स्तर के छात्रों का व्यावसायिक रूचियों का अध्ययन करके पाया कि 84ः प्रतिशत छात्रों ने प्राकृतिक विज्ञान, गणित तथा अंग्रेजी को प्रधानता दिया। छात्रों ने इन्जीनियरिंग और छात्राओं ने मेडिकल क्षेत्र को अधिक पसन्द किया।

**शोध परिकल्पनाएँ**

प्रस्तुत अध्ययन में व्यावसायिक रूचि के दस पक्षों को सम्मिलित किया गया है तथा परिकल्पनाएँ हर पक्ष से संबंधित बनाई गई हैं। प्रस्तुत अध्ययन में बनायी गई अमान्य परिकल्पनाओं का सांख्यिकी का प्रयोग करके परीक्षण किया गया है। परिकल्पना दो भागों में विभाजित की गई है। प्रस्तुत शोधकार्य में जो परिकल्पना निर्धारित की गई है वह निम्नलिखित हैः-

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की साहित्यक (L) क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की वैज्ञानिक (Sc) क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शासन (E) क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की वाणिज्य (C) क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की रचनात्मक (Co) क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की कलात्मक (A) क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की कृषि (Ag) क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
8. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की प्रवर्तक (P) क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
9. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक (S) क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
10. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की गृह (H) क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**न्यादर्शचयन**

शोधकर्ता ने इस शोधकार्य में न्यादर्श का चयन निम्न प्रकार से किया है-

1. दक्षिणी दिल्ली स्थित सरकार द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले सभी छात्र-छात्राओं को सम्मिलित किया।
2. प्रतिदर्श- शोधकर्ता ने दक्षिणी दिल्ली में स्थित सरकार द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में से सरल और नियत विधि द्वारा 10 विद्यालयों के 11वीं कक्षा का चयन किया गया जिसमें 5 बालक एवं 5 बालिका विद्यालय हैं।

इस प्रकार कुल 10 विद्यालयों में 410 छात्र-छात्राओं को प्रश्नावली दी गई जिसमें 400 सही एवं पूर्ण रूप से भरे हुए पाए गए जिसका उपयोग इस शोधकार्य में किया गया है।

**उपकरण**

इस शोधकार्य में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया हैः-

1. डॉ. डी.के. झा द्वारा निर्मित पारिवारिक वातावरण परीक्षण।
2. डॉ. एस. पी. कुलश्रेष्ट द्वारा निर्मित व्यावसायिक रूचि प्रपत्र।
3. शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने हेतु छात्र एवं छात्राओं के दसवीं कक्षा के अंकपत्र की प्रतिलिपि प्राप्त की गयी।

**पारिवारिक वातावरण परीक्षण**

1. प्रस्तुत शोधकार्य में पारिवारिक वातावरण परीक्षण हेतु डॉ. डी.के. झा द्वारा निर्मित "पारिवारिक वातावरण परीक्षण" का प्रयोग किया गया इस परीक्षण में पारिवारिक वातावरण से संबंधित 30 प्रश्न हैं। प्रश्नों का उत्तर देने हेतु (1) सदैव, (2) प्रायः, (3) यदा-कदा, (4) स्वल्प, (5) कभी नहीं ये पाँच स्तर का प्रयोग किया गया है। कोई भी उत्तर सत्य या असत्य

नहीं है। छात्र अपनी स्वेच्छानुसार सही विकल्प का चयन करके (सही का चिन्ह) अंकित करते हैं।

2. सभी प्रश्न विविध रूप से छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन करते हैं।

2.1इस परीक्षण के सभी प्रश्न पारिवारिक वातावरण से संबंधित हैं।

2.2 प्रश्न का कोई भी उत्तर सत्य या असत्य नहीं है। छात्र स्वेच्छानुसार अपना उत्तर देते हैं।

2.3 यह प्रश्नावली 16 वर्षो के छात्र एवं छात्रा हेतु निर्धारित की गई है।

2.4 प्रश्नों का उत्तर देने हेतु 15 मिनट का समय निर्धारित किया गया है। इसकी विश्वसनीयता परीक्षण पुनर्परीक्षण के माध्यम से प्रमाणित है। इसकी उच्चविश्वसनीयता .81 है। तथा इसकी वैद्यता दक्षशिक्षाविद के द्वारा प्रमाणित है।

**व्यावसायिक रूचि प्रपत्र**

चरों का मापन यंत्र व्यावसायिक रुचि प्रपत्र यंत्र (निर्माण डॉ॰ एस॰ पी॰ कुलश्रेष्ठ) इस व्यावसायिक रुचि प्रपत्र में रुचियों से सम्बन्धित 200 प्रश्न हैं, जो 10 प्रकार की व्यावसायिक रुचि क्षेत्रों से सम्बन्धित है। इस परीक्षण में 10 व्यावसायिक क्षेत्र-साहित्यिक (L),वैज्ञानिक (SC), शासन सम्बन्धी (E), व्यावसायिक (C), रचनात्मक (Co), कलात्मक (A), कृषि सम्बन्धी (Ag), प्रवर्तक (P), सामाजिक (S), गृह सम्बन्धी (H) सम्मिलित हैं। प्रत्येक क्षेत्र में 20 कार्य या प्रश्न हैं, जिनमें 10 उद्धर्वाधर और 10 क्षैतिज दिशा में हैं। व्यावसायिक रुचि प्रपत्र में किसी एक व्यावसायिक क्षेत्र में अधिकतम प्राप्तांक 20 तथा न्यूनतम प्राप्तांक शून्य है। प्रत्येक क्षेत्र में दिये गये कार्यों के सम्मुख () पसन्द वाले को (3) चिन्ह को एक (1) अंक तथा नापसन्द वाले को (7) जीरो (0) अंक दिया गया है। एक रुचि क्षेत्र के सभी(3) निशानों का जोड़ लिया जाता है; जैसे $L_1$ महिला के क्षेत्र के उद्धर्वाकार खाने (3) के निशानों तथा $L_2$ के क्षैतिज खाने (3) के निशानों को आपस में जोड़ लिया जाता है। इस परीक्षण की विश्वसनीयता 15 दिनों के अन्तराल में विश्वसनीयता गुणांक 0.69 प्राप्त की गई। इस परीक्षण में केवल उच्च वैधता वाली वस्तुओं को थस्टन रुचि प्रपत्र, स्ट्रांगवोकेशनल इन्टैस्ट, ब्लैंक एवं कूडर प्रिफैंस रिकॉर्ड फार्म ब् से ली गई है।

**शैक्षिक उपलब्धि**

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्रओं की शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन हेतु कक्षा 10 के वार्षिक परीक्षाफल को आधार माना गया। इसके लिए विद्यालय के कक्षा 11वीं के छात्र/छात्राओं से 10वीं के अंकपत्र की छायाप्रति प्राप्त की गई।

**सांख्यिकीय विधि**

सांख्यिकी विधि के अन्तर्गत मध्यमान (M) प्रमाप/मानक विचलन (S.D.) और टी-परीक्षण (t-test) तथा सहसंबंध विधि का प्रयोग किया गया है।

**प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या**

प्रस्तुत अध्याय में परिकल्पनाओं के परीक्षण से सम्बन्धित आँकड़ों का क्रमबद्ध रूप में सारणीकृत करके उनका विश्लेषण किया गया है।

**तालिका संख्या-1: माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की साहित्यिक (L) क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना करना**

| व्यावसायिक क्षेत्र | छात्राएँ (200) | | छात्र (200) | | ज मूल्य | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | M | S.D. | M | S.D. | | |
| साहित्यक (L) | 8.04 | 4.19 | 8.33 | 4.20 | 0.442 | सार्थक नहीं |

**सार्थकता**-सारणी संख्या 1 में माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की साहित्यिक क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना क्रान्तिक अनुपात (टी-मूल्य) के रूप में की गई है। प्राप्त टी-मान 0.442 है, जो सार्थकता के 0.05 पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि मध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की साहित्यिक क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

**तालिका संख्या-2: माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की वैज्ञानिक (Sc) क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना करना**

| व्यावसायिक क्षेत्र | छात्राएँ (200) | | छात्र (200) | | ज मूल्य | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | M | S.D. | M | S.D. | | |
| वैज्ञानिक (Sc) | 9.22 | 4.71 | 8.9 | 7.88 | 0.47 | सार्थक नहीं |

**सार्थकता**-सारणी संख्या 2 में माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की वैज्ञानिक क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना क्रान्तिक अनुपात (टी-मूल्य) के रूप में की गई है। प्राप्त टी-मान 0.47 है, जो सार्थकता के 0.05 पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की वैज्ञानिक क्षेत्र की व्यवसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

**तालिका संख्या-3: माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शासन सम्बन्धी (E) क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना करना**

| व्यावसायिक क्षेत्र | छात्राएँ (200) | | छात्र (200) | | ज मूल्य | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | M | S.D. | M | S.D. | | |
| शासन सम्बन्धी (E) | 11.80 | 4.12 | 12.13 | 4.29 | 0.44 | सार्थक नहीं |

**सार्थकता**-सारणी संख्या 3 में माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक रुचियों के अन्तर्गत शासन सम्बन्धी क्षेत्र की तुलना क्रान्तिक अनुपात (टी-मूल्य) के रूप में की गई है। प्राप्त टी-मान 0.44 है, जो सार्थकता के 0.05 पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शासन सम्बन्धी क्षेत्र की व्यवसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है

**तालिका संख्या-4: माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की वाणिज्य (C) क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना करना**

| व्यावसायिक क्षेत्र | छात्राएँ (200) | | छात्र (200) | | ज मूल्य | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | M | S.D. | M | S.D. | | |
| वाणिज्य (C) | 7.57 | 4.12 | 8.3 | 8.38 | 1.36 | सार्थक नहीं |

**सार्थकता**-सारणी संख्या 4 में माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की वाणिज्य क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना क्रान्तिक अनुपात (टी-मूल्य) के रूप में की गई है। प्राप्त टी-मान 1.36 है, जो सार्थकता के 0.055 पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की वाणिज्य क्षेत्र की व्यवसायिक रुचियों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता ह

**तालिका संख्या-5: माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की रचनात्मक (Co) क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना करना**

| व्यावसायिक क्षेत्र | छात्राएँ (200) | | छात्र (200) | | ज मूल्य | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | M | S.D. | M | S.D. | | |
| रचनात्मक (Co) | 5.32 | 4.59 | 4.42 | 3.03 | 1.63 | सार्थक नहीं |

**सार्थकता**-सारणी संख्या 5 में माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की रचनात्मक क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना क्रान्तिक अनुपात (टी-मूल्य) के रूप में की गई है। प्राप्त टी-मान 1.63 है, जो सार्थकता के 0.05 पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की रचनात्मक क्षेत्र की व्यवसायिक रुचियों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः

शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है

**तालिका संख्या-6: माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की कलात्मक (A) क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना करना**

| व्यावसायिक क्षेत्र | छात्राएँ (200) | | छात्र (200) | | ज मूल्य | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | M | S.D. | M | S.D. | | |
| कलात्मक (A) | 10.72 | 4.68 | 9.82 | 4.58 | 1.37 | सार्थक नहीं |

**सार्थकता**-सारणी संख्या 6 में माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की कलात्मक क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना क्रान्तिक अनुपात (टी-मूल्य) के रूप में की गई है। प्राप्त टी-मान 1.37 है, जो सार्थकता के 0.05 पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की कलात्मक क्षेत्र की व्यवसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

**तालिका संख्या-7: माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की कृषि सम्बन्धी (Ag) क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना करना**

| व्यावसायिक क्षेत्र | छात्राएँ (200) | | छात्र (200) | | ज मूल्य | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | M | S.D. | M | S.D. | | |
| कृषि सम्बन्धी (Ag) | 6.64 | 5.02 | 7.09 | 4.49 | 1.36 | सार्थक नहीं |

**सार्थकता**-सारणी संख्या 7 में माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की कृषि सम्बन्धी क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना क्रान्तिक अनुपात (टी-मूल्य) के रूप में की गई है। प्राप्त टी-मान 1.36 है, जो सार्थकता के 0.05 पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की कृषि सम्बन्धी क्षेत्र की व्यवसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

**तालिका संख्या-8: माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की प्रवर्तक (P) क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना करना**

| व्यावसायिक क्षेत्र | छात्राएँ (200) | | छात्र (200) | | ज मूल्य | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | M | S.D. | M | S.D. | | |
| प्रवर्तक (P) | 10.51 | 4.51 | 10.39 | 4.52 | 1.18 | सार्थक नहीं |

**सार्थकता**-सारणी संख्या 8 में माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की प्रवर्तक क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना क्रान्तिक अनुपात (टी-मूल्य) के रूप में की गई है। प्राप्त टी-मान 1.18 है, जो सार्थकता के 0.05 पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की प्रवर्तक क्षेत्र की व्यवसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

**तालिका संख्या-9: माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक (S) क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना करना**

| व्यावसायिक क्षेत्र | छात्राएँ (200) | | छात्र (200) | | ज मूल्य | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | M | S.D. | M | S.D. | | |
| सामाजिक (S) | 12.25 | 4.12 | 12.1 | 4.43 | 1.48 | सार्थक नहीं |

**सार्थकता**-सारणी संख्या 9 में माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना क्रान्तिक अनुपात (टी-मूल्य) के रूप में की गई है। प्राप्त टी-मान 1.48 है, जो सार्थकता के 0.05 पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक क्षेत्र की व्यवसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

**तालिका संख्या-10: माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की गृह सम्बन्धी (H) क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना करना**

| व्यावसायिक क्षेत्र | छात्राएँ (200) | | छात्र (200) | | ज मूल्य | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | M | S.D. | M | S.D. | | |
| गृह सम्बन्धी (H) | 11.65 | 4.05 | 8.05 | 4.37 | 6.04 | सार्थक है |

**सार्थकता-** सारणी संख्या 10 में माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की गृहसम्बन्धी क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना क्रान्तिक अनुपात (टी-मूल्य) के रूप में की गई है। प्राप्त टी-मान 6.04 है, जो सार्थकता के 0.05 पर सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की गृह सम्बन्धी क्षेत्र की व्यवसायिक रुचियों में सार्थक अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है।

**परिणाम**

आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि लिंगीय आधार पर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक रुचियों के अधिकांश क्षेत्रों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। गृह कार्य क्षेत्र में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। जिसका कारण छात्र एवं छात्राओं की रुचि गृह कार्यों में भिन्न होती है। सामान्यतः बालिकाओं की रुचि गृह कार्यों में बालकों की अपेक्षा अधिक पाई जाती है। अतः कह सकते हैं कि यदि छात्रों को किसी विशेष व्यवसाय के लिये उनकी रुचि के आधार पर उचित व्यावसायिक मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है तो वे अपनी ऊर्जा की सही दिशा में उपयोग कर सकते हैं और इससे उनकी दक्षता में भी वृद्धि होगी।

**निष्कर्ष**

वर्तमान समय में शिक्षा एवं शिक्षण के दृष्टिकोण में आमूलचूल परिवर्तन होते जा रहे है। अब शिक्षा का केन्द्र बिन्दु अध्यापक नहीं बल्कि विद्यार्थी है। आज के विद्वान शिक्षाशास्त्री बालक के स्वतंत्र व्यक्तिव विकास के सिद्धांत को सर्वोपरि मानता है। परिस्थितियाँ, महंगाई और सामाजिक अर्थव्यवस्था देखकर हमें स्वीकार करना पड़ता है। कि आज प्रत्येक छात्र को सामाजिक जरूरत एवं स्वयं की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर विकासोन्मुखी व्यवसायिक शिक्षा का चयन एवं अध्ययन करना चाहिये। किन्तु इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए आवश्यक है कि हम बालक को विषय के चुनाव के समय उसकी बौद्धिक शक्ति अभिरूचि और पारिवारिक तथा स्वयं बालक के सामथ्र्य को पूरा ध्यान में रखें। क्रो व क्रो की दार्शनिक धारा का इससे घनिष्ठ संबंध है। उनका सिद्धांत है कि बच्चो के मनोभाव को अच्छी तरह समझने का सफल प्रयास ही उन्हें सही दिशा दे सकता है। बच्चों को सच्चाई के मार्ग पर ले जाकर उनके व्यक्तित्व एवं सामाजिक विकास का कार्य किया जा सकता है अतः विद्यालय स्तर में प्रत्येक छात्र के हर एक पक्ष में रूचि लेकर उसकी व्यवसायिक रूचि जानना आवश्यक है।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *अस्थाना, विपिन, 1999 मनोविज्ञान और षिक्षा में मापन एवं मूल्याकन श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा - 2*
2. *माथुर, एस के, 2013, शिक्षा मनोविज्ञान विनो द पुस्तक मंदिर, आगरा*
3. *भार्गव महेश, 1990, आधुनिक मनो वैज्ञानिक एवं मापन, कचहरी, आगरा*
4. *शर्मा रमा एंव मिश्रा एम के, 2009 हिन्दी शिक्षण, अर्जु न पब्लिक शिक्षा हाउस, नई दिल्ली*
5. *सिंह, अरुण कुमार, 2013, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधिया, मोतीलाल बनारसी हाउस, दिल्ली*
6. *पाठक, पी.डी. 2009, षिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा ।*
7. *सिंह, अरूण कुमार उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान पेज नं-753 से 754*
8. *बुच एम. बी. (1972, 1978), "सेकण्ड सर्वे आॅफ रिसर्च एण्ड एजुकेशन" पृष्ठ 46-52*
9. *गाडनर जे. एस. (1940), "दी वुस आॅफ टर्म लेबल आफ एसपीरेषन सायलॉजिकल रिव्यू", पृष्ठ 59-68।*
10. *गोड़ एच.सी. (1973), दिल्ली के विद्यालय के छात्रों की "व्यवसायिक आकांक्षाओं कों प्रभावित करने वाले कारकांे का अध्ययन", शोध आई. आई टी, न्यू दिल्ली।*
11. *घोष, एच. सी. (1974), किसी भी रचनात्मक आत्मकथा के अध्ययन को भारतीय स्कूलों*

*में परामर्श की पद्धति बनाना, शोध प्रबंध कलकत्ता विष्वविद्यालय।*

12. *ग्रेवाल जे. एस. (1990), "व्यवसायिक वातावरण और शैक्षिक और व्यवसायिक पसंद" नेशनल सॉयकलाजिकल रिव्यू (आगरा)।*
13. *सिंह गुमान साहू (1997) "उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के छात्राओं की व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन" पं .रविशंकर शुक्ल वि. वि. रायपुर।*
14. *ए.बी.जे.ओ. (1970) नाइजिरियन किशोरों का शैक्षणिक एवं व्यवसायिक आकांक्षा का अध्ययन जनरल आफ एजुकेशन एण्ड वोकेशनल मेजरमेंण्ट- 462 अगस्त वाल्यूम 4/1 पेज 55-67।*
15. *गुप्ता, एम.पी., गुप्ता, ममता (2009)ः- शैक्षिक निर्देषन एवं परामर्ष, राखी प्रकाषन आगरा।*
16. *खुवेद और खॉन, रहमान (2007):- दिल्ली के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन।*
17. *Shah Rajul R. Tryout of Vocational Inventory on class9 to 12 students of Ahmedabad District. (Ahmedabad; Gujarat University, M.Ed Dissertation) 1999.*
18. *Musahid M. A comparative study of vocational interest of Muslim male and female students at secondary level in relation to achievment motivation. (Dissertation of M.Ed. Dept of Edu, AMU Aligarh.) 2002.*
19. *Howard Bitney & Romand. Making Vocational Choice, A Theory of Carlars, New Jersey Prentice Hall 1973.*
20. *Asija Anurag. A Study of Vocational Interest of the adolescents in relation to their intelligence and socioeconomic status (Scholarly Research Journal for Interdisciplinary studies 2016;4(36):10074.*